R. No. RN/4699-57 April–June 2014 Ram Sandesh

राम संदेश के नियम

1. आध्यात्मिक विद्या के गुप्त और अनुभवी रहस्यों तथा सदाचार–शिक्षा को सरल भाषा में जनता तक पहुँचाना हमारी राम सन्देश पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है।
2. राम–सन्देश में आत्मिक, नैतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक उन्नति के लेख ही छपते हैं, राजनैतिक या रोमांचक लेख नहीं। रचनाओं में काट–छाँट करने अथवा छापने या न छापने की स्वतंत्रता सम्पादक को है।
3. राम सन्देश का वर्ष जनवरी में आरम्भ होता है। वार्षिक चन्दा 20 (बीस) रुपये है। एक वर्ष से कम तथा आजीवन ग्राहक नहीं बनाये जाते। चन्दा दशहरा भंडारों में या मैनेजर, राम संदेश को, 9–रामाकृष्णा कॉलोनी, जी. टी. रोड, ग़ाजियाबाद (उ.प्र.) 201009 के पते पर दिसम्बर के अंत तक अवश्य भिजवा दें।
4. राम सन्देश डाक द्वारा नहीं भेजा जाता है। इसका वितरण भंडारों पर ही किया जाता है। कृपया अपनी प्रति लेना न भूलें।

राम संदेश

रजि. ऑफिस

9 – रामाकृष्णा कॉलोनी, जी.टी. रोड,
गाज़ियाबाद – 201009

राम संदेश

भक्ति, ज्ञान एवं कर्मयोग की आध्यात्मिक पत्रिका

मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना वर्ष 60 अप्रैल–जून 2014 अंक 2

मुद्रण : अंकोर पब्लिशर्स (प्रा.) लिमिटेड, बी–66, सैक्टर–6, नोएडा–201301

रामाश्रम सत्संग, गाज़ियाबाद

विषय-सूची

अप्रैल–जून 2014

क्रमांक			पृष्ठ
1.	सहजोबाई क पद	भजन	01
2.	आध्यात्म विद्या कर सार (भाग–5)	लालाजी महाराज	02
3.	आत्मा की धार	डा. श्रीकृष्णलाल जी महाराज	06
4.	गुरु सतगुरु	अनमोल वचन	09
5.	बिन गुन कीते	डा. करतार सिंह जी महाराज	11
6.	दिव्य देन	संस्मरण	19
7.	हम गुरुमुख हैं या मनमुख	विवेक विचार	30
8.	सत्संग के नियम		31

गुरु पूर्णिमा सत्संग

गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर सत्संग का आयोजन बक्सर में 12–13 जुलाई को किया जायेगा। बक्सर में सत्संग स्थल का पता इस प्रकार हैः–

नगर भवन, स्टेशन रोड, बक्सर

संपर्क व्यक्ति – श्री गिरजानंदलाल

फोनः 09308888778, 09386666966,

श्री प्यारे मोहनलाल, फोनः 09430927945

सभी सत्संगी भाई–बहन सादर आमंत्रित हैं. कृपया अपने आने की सूचना सम्बंधित व्यक्तियों को 15 दिन पहले अवश्य दे दें।

– मंत्री, रामाश्रम सत्संग गाज़ियाबाद

राम ॐ संदेश

संस्थापक

ब्रह्मलीन परमसंत डा. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज

संरक्षक

ब्रह्मलीन परमसंत डा. करतार सिंह जी

सम्पादक

डा. शक्ति कुमार सक्सेना

(सर्वोच्च आचार्य एवं अध्यक्ष)

वर्ष 60 अप्रैल–जून 2014 अंक 02

सहजोबाई के शब्द

हरि कृपा जो होय तो, नाहिं होय तो नाहिं,
पे गुरु किरपा दया बिनु, सकल बुद्धि बह जाहिं।

गुरु मग दृढ़ पग राखिए, डिगमिग–डिगमिग छांड़,
सहजो टेक टरै नहीं, सूर सती ज्यों माँउ।

गुरु बिनु मारग ना चलै, गुरु बिन लहै न ज्ञान,
गुरु बिन सहजो धुंध है, गुरु बिन पूरी हान।

परमसंत महात्मा रामचन्द्र जी महाराज

अध्यात्म विद्या का सार

संतों के समझाने के तरीके

बच्चा जब दुनियाँ में आता है तो अगर उस छोटे से बच्चे के जज़बात पर ग़ौर किया जाय तो उसमें तीन बातें मिलेंगी –

1. भोग का शैदाई यानी खाने पीने की ख़्वाहिश रखने वाला,
2. हर चीज़ की असलियत को जानने की ख़्वाहिश और
3. नुमाईश करने या दिखाने का कुदरती शौक।

यह तीन बातें हर बच्चे में मिलेंगी चाहे वह इंसान की औलाद हो या हैवान की। वह हर चीज को मांगता है, हर चीज़ की माहियत (असलियत) का इल्म लेता और अपने आप को दिखाता चलता है। इस भोग विलास व इल्मी तालाश व खुदनुमाई (अपने आप को दिखाने की इच्छा) की कोई हद नहीं है। जो चीज़ पसंद की देखता है उसी को लेना चाहता है। अपने सामने दूसरे की ज़रा भी परवाह नहीं। एक चीज़ से रग़बत (लगाव) कम हुई तो दूसरे की चाह है। मगर चाहता है सिर्फ़ अपने फ़ायदे की चीज़। अगर कोई कड़वी दवा या कड़वी चीज़ दी जाय तो मुँह फेर लेगा।

यह जज़्बा (भाव) सिर्फ़ इंसानी बच्चों में नहीं है बल्कि हैवानों के बच्चे भी इससे खाली नहीं, बल्कि अपनी ग़िज़ा को चुनने में इंसान से ज़्यादा तमीज़ रखते हैं। अगर हैवानों की हालत पर ग़ौर किया जाय तो बहुत से सबक मिलते हैं। ना–मरग़ूब (जो पसंद न हो) चीज़ की तरफ़ आँख भी नहीं उठाते। इसी तरह की बहुत सी बातें हैं जो हैवानों में कुदरती तौर से नज़र आती हैं, इनको बताने या सिखाने की ज़रूरत नहीं पड़ती। यह जानवरों में तो देखते हो मगर बेजान जिन्हें समझा जाता है वो भी इससे खाली नहीं मिलेंगे। वो भी

किसी चीज़ को अपनी तरफ़ खीचतें व दूर करते रहते हैं। हर चीज़ को बढ़ने, पूरा होने और सबसे मिलकर एक होने का कुदरती शौक है। इसी कुदरती शौक का नाम 'तलब' है।

यहाँ न कोई जानदार है न बेज़ान है। जिसने जैसी अपनी निगाह बना ली उसी निगाह से चीज़ों को देखा करता है और हर चीज़ को जुदा-जुदा समझता है। जो चीज़ हमारी हालत के साथ मेल रखती है उसे हम ज़ानदार कहते हैं और ज़ाहिरा (प्रगट) कहते हैं। मगर हक़ीक़त (असलियत) क्या है? यहाँ हर एक ज़र्रा (परमाणु) हरकत में नज़र आता है, एक परमाणु को खींचकर दूसरा साथ कर लेता है।

लकड़ी के ज़र्रात (अणुओं) में हरकत है और वे कुछ समय में कुछ के कुछ हो जाते हैं। हर चीज़ की हालत बदला करती है और हमेशा ही ये तबदीली का कानून जारी रहता है। इस तबदीली से साफ़ ज़ाहिर होता है कि उनके अंदर के ज़र्रात (अणु) हरकत में रहा करते हैं और हरकत का होना जानदारी की दलील (प्रमाण) है। मौजूदा निगाह की हालत से कोई कुछ ही कह ले - क्या इससे किसी को इंकार है? हमारे ख़्याल से इंकार नहीं होना चाहिए। क्योंकि ऐसे नज़ीर (मिसाल) हर वक्त देखते सुनते और महसूस करते रहते हैं। रगबत या नफ़रत (राग व द्वेष) इसी ज़ज़्बे-तलब के नतीजे हैं। मौजूदा ज़िन्दगी में जो चीज़ हमारे माफ़िक है उससे हम मिलने की ख़्वाहिश रखते हैं और जो माफ़िक नहीं है उससे अलग रहना चाहते हैं। कोई पूछ सकता है कि अगर सबको एकपने का सौदा (ख़ब्त) है तो यह रग़बत (लगाव) और नफ़रत कैसी? हम जैसे हैं, वैसों ही से, वैसे ही सामान के साथ हमारी रग़बत है और जो चीज़ इस बात से खाली है उसको हम फूटी नज़र से भी देखना नहीं चाहते।

हम इस कुदरती ज़ज़्बे (प्राकृतिक भावना) को तलब कहते हैं। और तालिब (इच्छुक), मतलूब (जिसकी इच्छा की जाय) यह तीन ज्ञान के

ज़रूरी लाज़िमी (आवश्यक) और पहले जीने (सीढ़ियाँ) हैं। यह न हों तो हमारा काम नहीं चल सकता। यह मज़मून (विषय) ऐसे हैं जो बहुत समय चाहते हैं। ज़्यादा उलझनों में डालना मंजूर नहीं है। सिर्फ़ समझने को एक इशारा ही काफ़ी होता है। बड़े लोगों का कहना है कि 'अक्लमंदों को इशारा ही काफ़ी है'। मिसालें बहुत सी दी जा सकती हैं।

तलब अपना काम करती है। ज़िन्दगी शुरु हो गयी है। उसके अंजाम (अंत) की अभी ख़बर नहीं है। नादान और नातजुरबेकार (अनुभवहीन) लोग फ़कीर और संतों के मज़हब (मत)का मज़ाक उड़ाते हैं, वो नहीं जानते कि उनकी तालीम (शिक्षा) सबकी चोटी पर है।

चुम्बक पत्थर लोहे को अपनी तरफ़ खींचता है। इसी तरह हमारी चुम्बक इस दुनिया और संसार रूपी लोहे को अपनी तरफ़ खींचती रहती है। इस खींचने में कशमकश (खींचातानी) है और कशमकश दुख का तमाशा है जिसमें ज्ञान हमको समझाता रहता है कि जिस चीज़ की ज़रूरत है हम उसी से ताल्लुक पैदा करें। बाकी दूसरी चीज़ों को नज़र से हटाते जायें। इसी से हमारा काम बनेगा।

यही हक़ीकत (ज्ञान) वास्तव में हमारे अमल, शग़ल और कौलोफेल (जप–तप तथा कर्मों आदि) की कमाई का तर्जुबा है। यही ज्ञान बताता रहता है कि 'नेक बनो', हिल्म (अधीनता) और इनक़सारी (दीनता) सीखो, सब से मुहब्बत करो और ग़रूर (अहंकार) को छोड़ो, क्योंकि इन्हीं गुणों की मदद से तलब में कामयाबी हासिल कर सकोगे और अगर गुमराह (पथ–भ्रष्ट) होते हो तो तुम जानो, भटकते रहोगे, परेशान और दुःखी रहोगे।

मुमकिन है इस तरह करने में पहले हमें कुछ दुख मालूम हो क्योंकि आदतों को बदलने में ज़रूर दुःख मालूम होता है। मगर जब आदतें दुरुस्त हो जाती हैं तब उसी रास्ते को हम सच्चा रहबर (रास्ता दिखाने वाला) पाते हैं और उसी की कद्र करने लगते हैं और उसी की मदद से ताकतवर (शक्तिशाली) होकर आगे बढ़ते हैं। यह

तलब की पहली मंजिल है। शुरु–शुरु में उसकी शक़्ल कैसी भी भद्दी नज़र आवे लेकिन धीरे–धीरे खूबसूरत होती जाती है और शानदार नज़र आती है।

संग तराश (पत्थर का काम करने वाले) को मूर्ति बनाने का ख़्याल पैदा होता है। यह ख़्याल हक़ीक़त में तलब ही है। मुमकिन है वह पहले साफ़ शक़्ल में नज़र न आवे और दिल इससे हिचकिचाये। मगर धीरे–धीरे जब वह पत्थर पर हथौड़ा मारने लगता है उसमें नई–नई खूबसूरती पैदा होती जाती है और वह शान्त चित्त होकर अपना काम करने लगता है। भद्दे पत्थर में से खूबसूरत मूर्ति निकालकर रख देता है।

एक जिज्ञासु गुरु की शरण में जाता है। उनकी नेक आदतों– सहनशीलता, दीनता, प्रेम, शान्त चित्त, मीठी बोली, और भिन्न–भिन्न अच्छी आदतों को देखकर उसके दिल में उनसे प्रेम और श्रद्धा पैदा होती जाती है। कुछ दिनों में उसी ज़ज़्बे (भावना) की सहायता से धीरे–धीरे अपनी बुरी आदतों को छोड़ता जाता है और कुछ समय में कुछ का कुछ हो जाता है।

मतलब यह कि बुरी आदतों को छोड़ना और अच्छी आदतों को ग्रहण करने की भावना होना ही 'तलब' कहलाता है। क्या यही तलब आपको मालिक के चरणों में है? अगर है तो फिक्र न करो। तलब को दिन–ब–दिन खूब बढ़ने दो। वह अपना काम किये बग़ैर न रहेगी। अगर तालिब (जिज्ञासु) के मन में तलब है, उसका दिल कुरेदता रहता है तो समझो कि ख़्वाहिश तरक्की पर है। ऐसे खुशनसीब तालिबों की न तलाश पूरी होती है न मुराद (मनोवाँछना) पूरी होती है, और न ही दिल को इत्मिनान (तसल्ली) होता है। ऐसी बेचैन हालत के बारे में ही कबीर साहब कहते हैं –

बिरहन दियो संदेसरा, सुनो हमारे पीव।
जल बिन मछली क्यों जिये, पानी में का जीव।। ⌘⌘

प्रवचन गुरुदेवः डा.श्रीकृष्ण लाल जी महाराज

आत्मा की धार

आत्मा की धार शरीर में चोटी के मुकाम पर उतरी है और वहाँ से रीढ़ की हड्डी से होती हुई (Coccyx) दुमची के मुकाम पर ठहर गई है और शरीर में इसकी शक्ति Nerves के जरिए फैली हुई है। यही जिन्दगी है जिससे यह जिस्म क़ायम है।

योग के दो तरीक़े हैं। एक अभ्यास और दूसरा सत्संग जिससे आत्मा की धार जो परमात्मा के चरणों से निकलती है, वापिस परमात्मा के चरणों से मिलाया जाता है। अभ्यास वह है जो गुरु ने बताया हो। योगीयों में प्राणायाम के तरीके से कुण्डलिनी को जगाते हैं, यानी अपनी साँस की धार से गुदा के मुकाम पर 'ओउम्' शब्द की चोट देते हैं। इससे एक तरह की आवाज़ (Vibration) पैदा होती है। बाज़ लोग इसके लिए प्राणायाम के अलावा नेति, धोती, पानी चढ़ाना आदि कियाएँ भी काम में लाते हैं। यानी प्राणायाम, अंतर की क्रिया और नेती–धोती व सफाई आदि बाहरी क्रियाओं से उस मुकाम को जगा लेते हैं और आत्मा उस मुकाम से उठकर इन्द्रिय के स्थान पर आ जाती है। वहाँ से भी प्राणायाम आदि कियाओं से उसे और ऊपर उठाते हैं और नाभि चक्र, हृदय चक्र, कंठ चक्र और ऊपर के चक्रों तक वापस ले जाते हैं। लेकिन संतों का तरीका इससे अलग और सहल है। उनके यहाँ नीचे के तीन चक्र (गुदा, इन्द्रिय और नाभि) को छोड़ दिया जाता है। अभ्यास ज्यादातर हृदय चक्र से शुरु कराते हैं। यह मुकाम ऐसा है कि इसके साधने से नीचे के तीनों मुकाम और ऊपर के तीनों मुकाम अपने आप सध जाते हैं और वक्त बच जाता है।

यहाँ पर शब्द या प्रकाश (जो भी बताया जाये) उसका अभ्यास करने से हृदय का मुकाम जाग उठता है, आत्मा यहाँ से उठकर ऊपर के मुकाम कण्ठ–चक्र और आज्ञा चक्र की तरफ चढ़ने लगती है। कण्ठ चक्र का अभ्यास नहीं कराया जाता। आज्ञा चक्र (जो दोनों भौहों के बीच में अंदर की तरफ है) उस पर ध्यान जमाया जाता है और गुरु मूर्ति का दर्शन या प्रकाश या शब्द का (जिसका अभ्यासी हो) उस मुकाम पर अभ्यास करने से यह मुकाम भी ज़ाहिर हो जाता है। आत्मा और ऊँची उठ जाती है। इसके बाद त्रिकुटी के स्थान पर (जो दोनों भौहों के एक इंच ऊपर और दो इंच गहरी जगह में है) का अभ्यास कराया जाता है। त्रिकुटी के आगे सुन्न, महासुन्न, भँवर गुफा, सत्पुरुष का मुकाम और उसके बाद संतों का देश या दयाल देश है।

यह हुआ अभ्यास जो नीचे से ऊपर की तरफ किया जाता है। यह किसी वक्त भी किया जा सकता है। मगर सुबह शाम इसका करना ज़रूरी है।

दूसरा है सत्संग। यह क्रिया ऊपर से नीचे की तरफ होती है। इसमें गुरु या सत्संग कराने वाला अपने ख्याल को परमात्मा के चरणों में लगाता है और वहाँ से फ़ैज़ खैंचकर सत्संगियों पर ख़्याल से फैलाता है। इस तरह उस फैज़ की धार को परमात्मा के चरणों से लेकर तमाम सत्संगियों में फैलाता रहता है। यह ऊपर से धार लेकर नीचे मिलाना है। सत्संगी यह ख़्याल करता है कि प्रकाश या आत्मा की धार ऊपर से (यानी ईश्वर से या गुरु की तरफ से) आ रही है, और हमारे चोटी के मुकाम से उतर कर सारे शरीर में फैली जा रही है।

उस धार में चार चीज़ें हैं – ज्ञान, प्रेम, प्रकाश और आनन्द। इसी से जिन्दगी है। अगर यह धार नहीं है तो ज़िन्दगी नामुमकिन है।

यह क्रिया सत्संग में गुरु के सामने बैठे हुए भी होती है। गुरुदेव के शरीर में से (त्रिकुटी या हृदय के मुकाम से जहाँ से बताया गया हो) प्रकाश की धार निकल रही है और हमारे त्रिकुटी के मुकाम या चोटी के मुकाम से होती हुई सारे शरीर में फैली हुई है। इसमें ज्ञान है, प्रेम है, प्रकाश है और आनन्द है। दिन के या रात के किसी वक्त भी गुरु की ख़्याली शक्ल सामने रख लेते हैं और आँखें बंद करके ख़्याल करते रहते हैं, इससे ज़्यादा फायदा होता है। परमात्मा का फैज़ आने लगता है और जैसे–जैसे आनन्द और शक्ति महसूस होने लगती है, दुनियाँ के बन्धन ढीले होते जाते हैं।

■■■■

गज़ल

फ़र्दोबषर पे अपनी दया ऐ दयालु कर।
तू हर किसी को अपने करम से निहाल कर।।

बन्दा भी तेरी महरो बफ़ा का है मुन्तजिर।
तू एक निगाह मुझ पे भी ऐ जुल्जलाल कर।।

मेरे गुनाह तो अफ़व के काबिल नहीं मगर।
तू मेरी आजिज़ी का ज़रा सा ख्याल कर।।

तू मुझ गुनहगार की कमज़ोरियाँ न देख।
मैं नातवां हूँ मेरी मदद और संभाल कर।।

मैं मुर्दा दिल ज़रूर हूँ लेकिन यह अर्ज है।
तू जिन्दादिल बना दे नई जान डाल कर।।

दौलत दे मुझको नाम की, भक्ति की,प्रेम की।
तू अपनी बख्शिशों से मुझे मालामाल कर।।

'आजिज' है गुनहगार सही तू गुनाह न देख।
तू अपनी रहमतों का ज़रा सा ख्याल कर।।

परमसंत डा.श्रीकृष्ण लाल जी महाराज के अनमोल वचन

गुरु–सत्गुरु

- जब चल पड़ो तब चलते जाओ, रास्ते से मत हटो, कामयाबी शर्तिया होगी। सभी शुरु में नक़ल (अनुकरण) करते हैं, असल (यथार्थ) तो बाद में आती है। लड़कियाँ बचपन में झूठा ब्याह रचाती हैं। फिर एक दिन अपना ब्याह भी कर लेती हैं। गुरु के दरवाज़े से न हटो। कहा है– ''द्वार धनी के पड़ा रहे, धका धनी का खाय''। मुसीबतें आती हैं, गुरु इम्तहान लेते हैं, मगर चाहे कुछ भी मिले, सुख या दुख, वह तुम्हारी जान है। सबसे ज़्यादा उसी को अज़ीज़ (सर्वप्रिय) रखो।
- और तरीकों में सिर्फ रास्ता बताया जाता है और अभ्यास कराया जाता है। लेकिन हमारे यहाँ इससे आगे भी कुछ और है। गुरु अपनी कृपा, तवज़्ज़ोह और इच्छाशक्ति से शिष्य के सतोगुणी मन को अपने मन में मिलाकर ऊपर ले जाता है जिससे शिष्य की आत्मा थोड़ी देर के लिए शहरी atmosphere (वातावरण) से ऊपर उठकर ब्रह्माण्डी मन का आनन्द लेने लगती है और इससे जल्दी तरक्की होती जाती है।
- गुरु के निजी रूप का (प्रकाश रूप का) नूरानी रूप का ध्यान किया जाता है। चाहे ध्यान में पहले उसका Physical-body (स्थूल शरीर) ही दिखता हो मगर वह नूरानी (प्रकाश रूप) है। अगर गुरु की तसवीर का ध्यान करते हो तो वह मूर्ति पूजा हो गई। जिस का ध्यान करोगे वही मिलेगा। अगर

तसवीर या मूर्ति का ध्यान करते हो तो मरने के बाद वही मिलेगी। इज्ज़त के तौर पर घर में तस्वीर रख लेना और बात है। सामने बैठकर भी जो ध्यान किया जाता है वह नूरानी रूप (प्रकाश रूप) का ही किया जाता है। वह प्रकाश बराबर सूक्ष्म होता जाता है और आगे जाकर सत्पुरुष से मिला देता है।

- गुरु में कितनी ही विद्या क्यों न हो, कितना ही ज्ञान क्यों न हो, कितनी ही शक्ति क्यों न हो, अगर उसने अपने आप को ईश्वर को समर्पण नहीं किया और ख़ुदी (अहंपना) बाक़ी है तो वो सच्चा गुरु नहीं है। अगर अधिकारी शिष्य हो और ऐसा पूर्ण गुरु मिल जाय तभी ईश्वर के दर्शन होते हैं लेकिन शर्त यह है कि पूर्ण श्रद्धा से गुरु के बताये रास्ते पर चलें और दुनियाँ की बड़ी से बड़ी चीज़ त्यागने में न हिचकिचायें, बल्कि ख़ुशी से त्याग दें।

●●●

परमसंत डा. करतार सिंह जी साहब की जन्म तिथि व पुण्य तिथि के अवसर पर उनकी पावन स्मृति में–वंदना

गुरु दर्शन की प्यासी अँखिया, बाट जोहत दिन–रतिया।
अभिलाषा गुरु चरण पड़े कब, हो पवित्र मेरी कुटिया।।
नाम जपत रहत निशि वासर, तन मन भी गुरुचरण न्योछावर।
आश करत गुरु–कृपा बने कब, पूजा करूँ बन गुरु चाकर।।
तन अर्पित मन चरण समर्पित, नाम गुरुजी का बहु चर्चित।
गुरु नाम है सार जगत में, वेद शास्त्र ग्रंथों में वर्णित।।
'हिमकर' की यह अभिलाषा, शांत करे गुरु पिपासा।
गुरु सेवा में सदा रहूँ मैं, करत दिन–रात जय वन्दना।।
यह ही है पूर्ण आशा।

– जयप्रकाश नारायण कर्ण 'हिमकर'

प्रवचनः परमसंत डा.करतार सिंह जी साहब

बिन गुन कीते भगति न होई.....

'ओउम् राम जय राम जय जय राम'

पूज्य गुरुदेव डा. श्रीकृष्णलाल जी महाराज प्रेरणा दिया करते थे कि इन शब्दों को समझकर इस नाम को लेना चाहिए।

'ओउम्' – परम पिता परमात्मा जो कण–कण में रमा हुआ है।

'जय राम'– हे प्रभु तेरी जय हो।

'जय जय राम' – मैं अपने तन मन धन से अपने आपको आपके चरणों में अर्पित करता हूँ।

इन अर्थों को और इस भावना को भीतर में रखकर इस नाम का जाप करना चाहिए।

''दुःख सुख दोनों सम कर जानो, यह गुरु ग्यान बताई।
कहो नानक बिन आपा चीन्हें, मिटे न भरम की काई।।''

संसार में रहते हुए दुख भी आता है और सुख भी। सुख में सुख सभी मानते हैं, परन्तु दुःख में सुख मानना यह सरलतम तपस्या है। दुःख में भी हम यह अनुभव करें कि प्रभु की रहमत की वृष्टि हम पर हो रही है। उनकी इतनी कृपा है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। यह दुःख भी प्रभु की रहमत है, बक्शीश है, कृपा है। उनकी प्रसादी है। तो हमें दुःख महसूस ही नहीं होगा। यह साधना की शिखरता है।

आँख बंद करना सरल है। किन्तु व्यवहार में आकर द्वन्दों में जीना और ईश्वर चरणों में लगे रहना, उसकी प्रसादी की वृष्टि में स्नान करना यह कठिन है। यही साधना है।

'मन के साधे सब सधे।'– मन को साधना है, चाहे दुःख आये या सुख।

'दुःख सुख दोनों सम कर जानो'– अपने दुःख और सुख दोनों को आत्मा का प्रसाद समझिये।

'यह गुरु ग्यान बताई'– सभी महापुरुष यह ज्ञान बताते हैं। परन्तु महापुरुष कहते हैं–

'कहो नानक बिन आपा चीन्हें, मिटे न भरम की काई'

हमें अहंकार का परित्याग करना होगा। 'मैं ऐसा हूँ', 'मैं तो बहुत चतुर हूँ', 'मैं यह कर सकता हूँ' यह सब मन की बातें हैं। जब तक हम अपने भीतर से अहंकार को नहीं निकालेंगे और आत्मस्थिति को नहीं प्राप्त करेंगे तब तक आनन्द प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है। आत्मा तो भगवान शिव की तरह शांत रहती है। जब आप आत्मा का साक्षात्कार कर लेंगे, तब वह आपका स्वभाव बन जायेगा और तब आप भी भगवान शिव की तरह शांत रहेंगे। आँधी आती है, बारिश होती है तो होती रहे। सुख है तो ठीक है, दुःख है तो भी ठीक है।

अहंकार में ज्ञानी कहता है 'मैं प्रभु से दूर नहीं हूँ', वह कहता तो है 'अहंब्रह्मस्मि'। किन्तु यह कहकर वह छूट जायेगा ऐसा नहीं है। उसे साधना करनी पड़ेगी। केवल अहंब्रह्मस्मि कहने से व्यक्ति ब्रह्म बन जायेगा, परमात्मा बन जायेगा, ऐसा नहीं है। बहुत कठिन साधना है। चाहे ज्ञान का रास्ता अपनायें, चाहे भक्ति का, बात एक ही है। अंतर में और बाहर सब जगह प्रभु की अनुभूति करनी होगी। सच्चे जिज्ञासु के हृदय में आंतरिक स्थिरता बनी रहती है। कोई गालियाँ दे जाता है तो वह विक्षिप्त नहीं होता। कोई स्तुति कर जाता है तो वह प्रसन्न नहीं होता। वह अपने स्वरूप में, परमात्मा के स्वरूप में स्थिर रहता है। संसार में उसे परमात्मा दिखाई देता है। मैं ब्रह्म हूँ और संसार भी परमात्मा है। वह भी ब्रह्म है, तू भी ब्रह्म है। किन्तु ऐसी स्थिति तब आती है जब भीतर से अहंकार यानी 'मैं' पूर्णतः निकल जाता है। यह 'मैं' ही दुःख और सुख का कारण है।

अर्जुन ने भले ही महाभारत में दुःख सुख का अनुभव किया हो। भगवान कृष्ण जो उनका रथ चला रहे हैं वो भी उसी वातावरण से जुड़े हैं, परन्तु उन पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं है। वे आत्म स्थित हैं– आत्मस्थित परमात्मा हैं।ईसा कहते हैं–हमारा पिता परमेश्वर है। प्रत्येक जीव का लक्ष्य यही है कि उसे अपने पिता जैसा बनना है। I and my father are one (मैं और मेरे पिता एक हैं)। इसके लिए हम क्या साधना करें? व्यवाहरिक जीवन में भी प्रत्येक व्यक्ति का यह लक्ष्य होता है कि वह न केवल अपने पिता जैसा बने बल्कि उससे एक कदम आगे ही चले। पिता ने शायद किसी तरह मैट्रिक पास की हो किन्तु पुत्र सोचता है कि मैं तो पी. एच. डी. करूँ।

दिल्ली ग़ाज़ियाबाद में कितने पब्लिक स्कूल और कॉलेज खुल गये हैं।वहाँ बच्चे अपनी मातृभाषा नहीं पढ़ पाते।चौथी, पाँचवी तक तो अंग्रेजी पढ़ते हैं, उसके बाद हिन्दी पढ़ना शुरु करते हैं।हमारा कानून भी चुप बैठा देख रहा है। हिन्दी शुरु से पढ़ाई जानी चाहिए। एक बार बच्चा अंग्रेजी पढ़ जाये तो फिर उसे हन्दी पढ़ने में रुचि नहीं रहती। यही हालत हम सब लोगों की है।जब हम सब संसार में, माया में ग्रस्त हो जायेंगे तब आत्मा के सागर में कैसे डुबकी लगा पायेंगे। बहुत कठिन है। माया का साम्राज्य तो बढ़ता ही जा रहा है।

जब तक व्यक्ति माया के संसार से निकलेगा नहीं, आत्मा रूपी गंगा में स्नान नहीं करेगा, उसका जीवन सफल नहीं हो सकता। चाहे वह कितना भी सत्संग में आये कुछ नहीं होगा। हम स्वनिरीक्षण करके देखें कि हमें कितने वर्ष हो गये हैं सत्संग में आते हुए और हमारे अंदर की स्थिति क्या है? हम सब दलदल में फँसे हैं। दुःख में दुखी हो जाते हैं और सुख में सुखी हो जाते हैं। यह सच्चे साधक की स्थिति नहीं है। सच्चे साधक का स्वरूप तो वही है जो आत्मा या परमात्मा का है। मन का साधना ही सच्ची साधना है। तम, रज, सत् इन तीनों गुणों से मन को स्वतंत्र करके गंगा में

धो डालना है। जब तक मन आत्मा जैसा नहीं बन जाता आपको समझ लेना चाहिए कि अभी कोई प्रगति नहीं हुई है। किन्तु रास्ता नहीं छोड़ना है।

''बहुत जनम बिछुड़े थे माधव, यह जनम तुम्हारे लेखे।
कह रविदास आस लग जीवौं, चिर भय दरसन पेखे।।''

इतने बड़े संत कह रहे हैं कि हे प्रभु कितने जन्म हो गये हैं आपसे बिछुड़े हुए। यह मन है कि प्रभु के चरणों में जाने ही नहीं देता। संत सच्ची–सच्ची बात कहते हैं। हम एकाध पुस्तक पढ़ लें, और सत्संग में चले जायें तो हम समझते हैं कि हम कुछ बन गये। किन्तु ऐसा होता नहीं। हमारी साधना का प्रभाव हमारी वाणी में, हमारे विचारों में और विशेषकर हमारे व्यवहार में व्यक्त होना चाहिए। परमात्मा के गुण हमारे अंदर आने चाहिए। हम में और परमात्मा में कोई अंतर नहीं रहना चाहिए। ऐसी स्थिति आप सब सत्संगियों की होनी चाहिए।

ऐसा व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को दुःखी देखकर स्वयं भी दुखी हो जाता है। परमात्मा भी यही चाहता है कि संसार में दुःख कम हो जाये। जितने भी संत व गुरुजन आये हैं उन सबने भी यही रुख अपनाया। परन्तु हम सब सोये हुए हैं। दूसरों का दुःख क्या दूर करेंगे, पहले अपने दुःख से तो निवृत्त हो लें। हम ऐसा नहीं कर पा रहे हैं। कोई हमें बुरा शब्द कह देता है तो हमें आग सी लग जाती है। कोई हमारी स्तुति कर देता है तो हम में अहंकार आ जाता है। यह तो साधना नहीं है। साधना में तो भगवान शिव की तरह सिद्ध बनना पड़ेगा। प्रभु जैसा व्यवहार करना पड़ेगा।

प्रभु पिता समान हैं जिस प्रकार पिता बच्चों को दुःखी नहीं देख सकता, इसी तरह ईश्वर भी हमारे दुःखों को नहीं देख सकता। परमात्मा की ओर से हमारे कल्याण के लिए सुख की वृष्टि होती है, किन्तु हम ही पीठ मोड़ लेते हैं। प्रतिक्षण उनकी कृपा की वर्षा हो रही है परन्तु हम उसे ग्रहण नहीं कर पाते। । हम चौबिसों घंटे

संसार के दुःख–सुख की बातें करते रहते हैं, टी. वी. के आगे बैठे रहते हैं। अतः वही विचार हमें सारे दिन आते रहते हैं। हम अपना जीवन व्यर्थ खो रहे हैं। पता नहीं इस जन्म के बाद मनुष्य का जन्म मिले या नहीं। यह अमूल्य समय हम खो रहे हैं। हमें अपने चित्त को निर्मल करना है, उसे द्वन्दों से बचाना है। हम सब द्वन्दों में फँसे हैं – दुःख–सुख, बुरा–भला, शत्रु–मित्र आदि आदि। हमारा व्यवहार शुद्ध नहीं है। इस वक्त सारे देश की स्थिति बहुत गंभीर है। वैसे तो सारे विश्व में अनाचार फैला हुआ है, किन्तु इतना नहीं जितनी बुराईयाँ हमारे देश में हो रही हैं। हम अच्छे–अच्छे वस्त्र पहनकर जैन्टलमैन बन जाते हैं और समझते हैं कि हमारे जैसा कोई नहीं। ये सुन्दर वस्त्र पहनने से कुछ नहीं होगा।

"बिन गुन कीते भगति न होई।"

जब तक आप आत्मिक गुणों को नहीं अपनायेंगे तब तक आत्मा की अनुभूति नहीं होगी। मैं बार–बार कहा करता हूँ कि महापुरुषों के चरणों में बैठकर उनकी वाणी सुनें। घर जाकर एक–एक अक्षर पर मनन करें और वैसा बनने का प्रयास करें। इसी का नाम अभ्यास है। गिरेंगे तो हम अवश्य किन्तु गिरकर फिर उठना चाहिए। उठने का अर्थ है कि ईश्वर जैसे बनने का फिर प्रयास करें। व्यवहार से, विचार से, वाणी से, भीतर और बाहर से उसमें और हम में कोई अंतर न रह जाये।

"तू तू करता तू भया, मुझमें रही न हूँ।"

मेरे भीतर में कोई अहंकार नहीं, अहंकार का अर्थ है–मेरा–तेरा। यहाँ मेरे–तेरे की कोई दीवार नहीं रहती, मैं और मेरापन खत्म हो गया, यही साधना है। इस 'मैं' को निकाल कर तू ही तू है। आत्मा परमात्मा है। आप सब परमात्मा के अंश हैं परन्तु हम भूले हुए हैं। इस माया रूपी कीचड़ में फँसे हुए हैं। हमारे मन में दौड़ लगी हुई है, कि मेरे पास करोड़ों रुपये हो जायें, घर बन जाये आदि आदि।

हमारी आवश्यकतायें खत्म ही नहीं होतीं। अंग्रेजी में कहते हैं– 'My richness consists in smallness of my wants'.

आवश्यकतायें तो सबकी होती हैं लेकिन असली धनाड्य वही है जिसके भीतर में इच्छाऐं न हों या कम से कम हों। आगे चलकर कोई भी इच्छा न रहे। यदि हो तो केवल परमपिता परमात्मा की प्राप्ति की इच्छा ही हो।

वास्तव में हमारे देश की संस्कृति और इतिहास बतलाते हैं कि चौरासी लाख योनियों के बाद मनुष्य जीवन मिलता है। यदि इसको हमने व्यर्थ गंवा दिया तो पछताना पड़ेगा। कोई भी शास्त्र उठाकर देख लें उसमें आपको ज्ञात होगा कि पिछले जन्म में की गई बुराई या अनीति का फल आगे जन्मों में भुगतना पड़ता है। पाँडव पाँच भाई थे, सबका अतीत पृथक–पृथक था। दुर्योधन का अतीत बहुत गंदा था इसलिए वह अंधे पिता के घर पैदा हुआ। बाहर उसके चक्षु थे पर भीतर से वह अंधा था अर्थात् विवेकहीन था। हमारे भीतर भी विवेक की कमी है।

विवेक को साधना ही सच्ची साधना है। बुरी बातों को छोड़ना, अच्छी बातों को अपनाना और आगे चलकर अच्छी बातों को भी छोड़ देना है और सिर्फ ईश्वर को अपनाना है। महाभारत और गीता का संक्षिप्त सार भी यही है। गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं 'मुझे वे लोग प्रिय हैं जिनमें निम्न गुण हैं। गीता के बीसवें अध्याय के तेरहवें से बीसवें श्लोक में उन गुणों का वर्णन है। वैसे तो गुणों का कोई अन्त नहीं है, भगवान ने संक्षिप्त में मुख्य गुण बताये हैं। हर साधक को गीता का बारहवाँ अध्याय अवश्य पढ़ना चाहिए।

इच्छायें और आशाएँ जब बढ़ जाती हैं तो मन क्षुब्ध हो जाता है। जब मन अति क्षुब्ध होता है तो कोध आता है। जब हम भगवान के गुण अपनाते हैं तो संतुष्टि होती है। इसलिए ईश्वर के गुणों को अपनाने की कोशिश करें। किन्तु करें क्या संसार ही ऐसा बन गया

है कि बेईमानी के बिना कोई व्यक्ति अपना जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। चाहे वह नौकरी करे या व्यापार झूठ आदि तो बोलना ही पड़ता है। हम रोज अख़बारों में पढ़ते हैं अमुक अधिकारी को बेईमानी करने के लिए नौकरी से निकाला गया। तब भी बेईमानी चल रही है। पहले छुपी हुई चलती थी अब खुलकर हो रही है। यह देश की गिरती अवस्था है। बेईमानी अब हमारा स्वभाव बन गया है, हम बेईमानी को बेईमानी समझते ही नहीं।

ऋषियों ने संसार का परित्याग क्यों किया? वे भी घर में बैठकर साधना कर सकते थे। हमारे संतों ने गुरुओं ने कहा कि साधना घर में बैठकर भी हो सकती है। परन्तु यह बहुत कठिन है। हमारे अन्दर इतनी बुराईयाँ हैं, इतने अवगुण हमारे चित्त में भरे हैं कि एक जन्म में उनसे मुक्त हो पायें यह असम्भव है।

'जेता समुंद सागर नीर भरया, तेते अवगुन हमारे।'

इसीलिए बार-बार आपके चरणों में निवेदन करता हूँ कि गंभीरता को अपनायें। जब तक चक्षुओं से आँसू नहीं बहेंगे कि मैने ऐसी बुराई क्यों की? रात को नींद नहीं आयेगी कि मुझसे ऐसी बुराई क्यों हुई, और उसका असर अभी तक चल रहा है, क्यों नहीं छूटता? मुझे उस परमात्मा की याद चौबीसों घंटे क्यों नहीं रहती? उसके चरणों की रज क्यों नहीं प्राप्त होती, उसके दर्शन मुझे क्यों नहीं होते? जब तक ऐसी गंभीरता हमारे भीतर नहीं आयेगी तब तक अवगुणों से मुक्त नहीं हो पायेंगे। गुरुकृपा से हम रास्ते पर तो चलना शुरु हो जाते हैं परन्तु पूर्णतः स्वच्छ एवं निर्मल हो जायें, यह एक जन्म में तो संभव नहीं है।

''अब किरपा करके बक्श देओ, हम पापी वड़ गुनहगार''

हे प्रभु! हमारे प्रयासों से कुछ नहीं हो सकता। आप ही कृपा करें तो चित्त निर्मल होगा और आपकी चरण रज प्राप्त कर सकेंगे, अन्यथा नहीं। इसका अर्थ यह नहीं कि हम सुस्त हो जायें, प्रयास जारी

रखें। परन्तु यह समझ लेना चाहिए कि कितने प्रयास की ज़रूरत है। बहुत प्रयास करना पड़ेगा, बहुत व्रत रखने पड़ेंगे। झूठ नहीं बोलें, बुरी कमाई का अन्न नहीं खायें, किसी का शोषण नहीं करना है, कानों से किसी की बुराई न सुनें, आँखों से किसी की बुराई न देखें, मुख से किसी की बुराई नहीं करें और हृदय में किसी के प्रति बुराई न रखें। इस जीवन में अहंकार से मुक्त हो जायें और अहंकार के कारण जो बुराईयाँ हैं उनसे मुक्त हो जायें।

हमारे यहाँ गंगा स्नान का बहुत महत्व है। गंगा स्नान इस चित्त का करना है। भीतर के मन का, इस स्वभाव का है।

'ब्रह्म ज्ञानी निर्मल ते निर्मला' अर्थात् जिसने ब्रह्म ज्ञान प्राप्त कर लिया है वह अति निर्मल हो जाता है। केवल ये शब्द पढ़ लेने से कुछ नहीं होगा। हमें ब्रह्म ज्ञानी बनना है। यही जीवन का लक्ष्य है।

●●●

कल्पतरु

यूनान के महान दार्शनिक सुकरात से एक युवक ने प्रश्न किया, सफलता के लिए सबसे जरूरी क्या है? सुकरात ने कहा – मेरे बताने से तुम्हें समझ नहीं आयेगा, उसे महसूस करना होगा। युवक बोला– मैं महसूस करके जानना चाहता हूँ। सुकरात ने कहा, ठीक है, कल सुबह नदी के किनारे आ जाना। अगली सुबह युवक नदी के किनारे पहुँच गया। सुकरात युवक को अपने साथ लेकर पानी में उतर गये। वे नदी में वहाँ पहुँच गये, जहाँ पानी उनकी गर्दन तक आ गया। अचानक सुकरात ने युवक का सर पकड़ कर उसे पानी में डुबो दिया। कुछ सेकण्ड में ही युवक छटपटाने लगा, तब उन्होंने उसे छोड़ दिया। युवक पानी से सिर बाहर निकालकर तेज–तेज सांसे लेने लगा। तब सुकरात ने उसे समझाया कि पानी के अंदर तुमने सांस लेने के लिए जितनी शिद्दत से प्रयत्न किया वैसी ही तन्मयता और मेहनत से किया गया प्रयास ही सफलता के लिए आवश्यक है।

संस्मरण

दिव्य देन

गुरु प्रेम की अविस्मरणीय घटनायें

वर्ष 2005 की यह घटना एक अविस्मरणीय याद बनकर रह गई है। वार्षिक भंडारे का कार्यक्रम दि. 9–10–11 तथा 12–10–2005 को चौधरी भवन में ही निर्धारित था।हम लोगों का रिजर्वेशन श्रमजीवी एक्सप्रेस से था। उसी दरम्यान दो ऐसी घटनायें घटी जिसे सुनकर या जानकर हर किसी ने माना कि 'क्या ऐसा भी हो सकता है।'

भंडारे से करीब एक हफ्ते पूर्व आरा के करमन टोला स्थित हमारे मकान में एक चमत्कारी घटना घटी जो इस प्रकार है। हमारे मुहल्ले में स्थित बिजली का ट्रांसफार्मर अचानक खराब हो गया और उसे repair के लिए ले जाया गया। इस वजह से पूरे मुहल्लेवासी अन्धेरे में ही रहने को मजबूर थे। इसी क्रम में थोड़े समय पश्चात पानी की टंकी भी मोटर न चल पाने के कारण खाली हो गई। चापाकल का एक्सटेंशन ऊपर तक नहीं था और नीचे से पानी भरकर ऊपर तक लाना हमारे लिए अत्यन्त कठिन कार्य था। ऐसी स्थिति में रहते हुए जब छः–सात दिन गुजर गये और किसी भी प्रकार की राहत की कोई उम्मीद न पाकर एक रात पूजा के बाद हम लोगों ने गुरु महाराज से प्रार्थना की कि हमारी कठिनाई आप ही दूर कर सकते हैं। उसी रात करीब दो बजे इन्डीकेटर की लाईट अचानक जल उठी जिससे महसूस हुआ कि लाईट आ गई है। पत्नी ने मुझे जगाकर कहा कि ''देखिए लाइन आ गई है, अतः पानी भरने के लिए मोटर चला दीजिए''। मुझे उसकी बात का विश्वास नहीं हुआ, मैंने कहा कि ''शाम तक तो ट्रांसफार्मर नहीं लगा था तो लाईन कहाँ से आ

जायेगी''। वह हठ करने लगी तो मैं अनमने मन से उठा और यह देखकर आश्चर्य चकित रह गया कि लाइन सचमुच आ गई है। मैंने डरते–डरते स्विच ऑन किया और मोटर चलने लगी। बाहर आकर देखा तो चारों तरफ घुप अन्धेरा था। पड़ोसी ने मोटर की आवाज सुनकर पूछा कि 'आपकी मोटर कैसे चल रही है'? हम उन्हें क्या जवाब देते। हम दोनों की आँखें नम हो गईं। हमने गुरु महाराज का लाख–लाख धन्यवाद किया। आखिरकार टंकी भर गई और लाईन स्वतः ही बन्द हो गई।

2. दूसरी अविस्मरणीय घटना दि. 7/10/2005 को घटी। मैं सत्संग के लिए गया हुआ था, तभी अचानक घर में कुछ चोर घुस आये। सभी के हाथ में रिवाल्वर थी। उस समय घर में मेरा भाई, एक पड़ोसी व किरायेदार भी मौजूद थे। चोरों ने उन्हें पकड़कर बाँध दिया। मेरी नातिन किचन में चाय बना रही थी। उनमें से एक चोर किचन में घुस गया और उसे बालों से पकड़कर बोला कि 'चाबी दे दो नहीं तो गोली मार दूँगा'। वह चिल्लाने लगी। उस समय मेरी पत्नी पूजा के हॉल में कुछ काम कर रही थी। चिल्लाने की आवाज सुनकर वह नीचे आईं तो उन्हें भी दो चोरों ने घेर लिया। पहले तो उन्हें लगा कि दशहरे का चंदा माँगने वाले हैं किन्तु हथियार देखकर उनके भी होश उड़ गये। तभी अचानक उनकी नज़र दिवार पर टँगी गुरु महाराज की तस्वीर पर पड़ी। उन्हें लगा कि जैसे तस्वीर में से दो लकीरें निकली और उनकी बाहों में समा गईं। ऐसा लगने लगा कि जैसे उनकी भुजायें लोहे की हो गई हों। अब उनमें गज़ब की ताकत आ गई और अपने आप को छुड़ाते हुए उन्होंने चोरों को जोर से ऐसा ढकेला कि दोनों गिर पड़े, जिससे उनमें से एक का हथियार भी गिर पड़ा और दूसरा सीढ़ी पर लुढ़कने लगा। गिरने वाला चिल्लाया कि 'अरे भागो रे! लगता है चण्डी आ गई है। शोर सुनकर आस पड़ोस वाले भी आ गये, किन्तु तब तक चोर भाग चुके थे। किसी ने टेलीफोन कर दिया तो पुलिस भी आ गई। किन्तु किसी

प्रकार का नुकसान न हुआ देखकर वापस लौट गई। इस प्रकार गुरु महाराज की असीम व चमत्कारी कृपा से एक बड़ा हादसा होने से बच गया। जब गुरुदेव को इस घटना के विषय में बताया तो वे ठठाकर हँसे और बोले ''बेटी मैं तुम्हें ऐसी ताकत दे सकता हूँ कि तुम एक साथ सौ चोरों को भी मार सकती हो।''

गुरु कृपा की ऐसी मिसालों का कोई अन्त नहीं है। यह श्रद्धा एवं विश्वास का ही दूसरा रूप है।

– रामलखन प्रसाद आरा (भोजपुर)

....जब दिल से हाज़िर नाज़िर जानकर पुकारा

सन् 1990 में मैं सत्संग से जुड़ा। इस अवधि में अनेकों अनुभव हुए, सभी का वर्णन तो कागज पर नहीं किया जा सकता है। कुछ प्रेरणादायक संस्मरण देने का प्रयास कर रहा हूँ।

1.मैं और मेरे छोटे भाई की साझे की दुकान थी। छोटा भाई कुसंगती में पड़ कर दुराचारी हो गया था। मैंने पहाड़गंज जाकर गुरु महाराज से उसके लिए प्रार्थना की। गुरु महाराज ने कहा– ''छोड़ो उसको, वह तो वही करेगा जो करता आया है, अपनी देखो।'' वहाँ से लौटने के बाद छोटे भाई का व्यवहार मेरे प्रति बहुत सख़्त हो गया। वह अनेक प्रकार से मुझे प्रताड़ित करने लगा। कोई और उपाय न पाकर बँटवारा करने का निश्चय लिया गया और हम अलग–अलग हो गए। साथ ही आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गई यहाँ तक कि मैं और मेरा परिवार 'सोंठ–नमक' के पानी के साथ रोटी खाकर गुज़ारा करने को मजबूर हो गये। मांड–भात मुश्किल से भोजन में मिल पाता था। मैं अन्दर ही अन्दर गुरु भगवान को याद करता रहता था। इधर, गुरु महाराज मेरे लिए इतने चिन्तित हो गए थे कि आरा से किसी का भी पत्र जाता था तो वे उन्हें लिखते थे– जैन परिवार पर जो संकट आया है आप उसमें उनकी मदद करें।

भाई के साथ केस मुकदमे के समय मुझे फोन पर अपना दिशा–निर्देश यथा समय दिया करते थे।

भाई के साथ झगड़े की स्थिति में नौबत यहाँ तक आ गई कि मेरी जान पर बन आई। मेरी पत्नी ने गुरु महाराज को पत्र के माध्यम से बताया कि 'मेरे पति का जीवन खतरे में है। कभी भी उनकी हत्या हो सकती है'। गुरु महाराज ने पत्रोत्तर में लिखा कि ''सत्संगियों के परिवार में जो झंझट हुआ करते हैं, उसका सत्संगी को अच्छा परिणाम ही मिलता है। आप बिल्कुल निश्चिंत रहें।''

आज मैं सपरिवार आनन्द से हूँ। यह सब उनका ही प्यार और आशीर्वाद है।

2.एक बार अपनी दुकान खोलने के लिए मैं प्रातः जब वहाँ पहुँचा तो देखता हूँ कि मेरी दुकान के दरवाजे के ठीक बीचोंबीच प्लेटफार्म पर लाल कपड़े में बंधा एक घड़ा रखा हुआ है, जिसके ऊपर सिन्दूर, आटे का पुतला और कई अन्य टोटके की चीज़ें रखी हुई हैं। बिना उसे हटाए हुए मैं दुकान खोल नहीं सकता था। मैं भयभीत था– कहीं किसी ने मंत्रित करके मेरे अनिष्ट के लिए तो ऐसा नहीं किया है। कोई भी सफाईकर्मी उसे छूने तक को तैयार नहीं था। वृहस्पतिवार का दिन था। मैं असमंजस में था कि क्या करूँ। गुरु महाराज का स्मरण किया और सोचा कि उन्हें फोन करके इसकी जानकारी दूँ। अभी दस पन्द्रह कदम ही चला होऊँगा कि अन्दर से आवाज आई कि वापस दुकान जाओ, वहाँ कुछ भी नहीं है।

मैं वापस लौटा। सचमुच वहाँ वह घड़ा नहीं था। मैंने सामने के चाय दुकानदार से पूछा तो उसने बताया कि जिधर आप गये थे उधर से ही दो बच्चे बड़ी तेजी से दौड़ते हुए आए और उस घड़े को लेकर दूसरी ओर चले गए।

मेरी आँखो से अश्रु धारा फूट पड़ी। प्रभु! आपकी हाजरी–नाजरी का जवाब नहीं। आप मुझमें हैं और मेरी आवाज सुनते हैं। फिर

जाए, प्रभु से यही प्रार्थना है।

3.मेरी पुत्री का विवाह सम्बन्ध पक्का हो चुका था। मेरी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। दो हज़ार रुपये भी पास में नहीं थे। लड़के वालों ने मात्र डेढ़ माह का ही समय इन्तजाम के लिए दिया था। मैं बहुत चिन्तित था।

रविवार के साप्ताहिक सत्संग में जाने के लिए मैं तैयार हो रहा था। तभी आरा प्रभारी डॉ. आर.सी. वर्मा जी का फोन आया, उन्होंने तुरन्त चौक पर पहुँचने का आग्रह किया और कहा कि सब साथ ही सत्संग में चलेंगे। मैं वहाँ पहुँचा, तभी पूज्य डाक्टर साहब ने अचानक गुरु महाराज को फोन लगा दिया और मुझसे कहा 'लीजिए, गुरु महाराज से अपनी पुत्री के विवाह के सम्बंध में बात कीजिए। मैं अचानक क्या बात करूँ? अन्दर से मैं इसके लिए तैयार नहीं था। मेरे मुख से इतना भर निकला– 'पिताजी! मेरी बेटी की शादी तय हो गई है। एक निर्धन पिता पर ऐसी स्थिति में जो दवाब पड़ता है, उस बारे में मैं आप से क्या कहूँ? मुझे दवाब मुक्त कीजिए और आशीर्वाद दीजिए कि सब कुछ ठीक से हो जाए।

दूसरे ही दिन से मेरे ससुराल पक्ष के रिश्तेदारों ने आपस में मोबाईल पर इस सम्बन्ध में बात करना शुरु कर दिया। वो आर्थिक रूप से सम्पन्न थे, और मेरी बेटी की शादी बड़े धूमधाम से उन सबने मिलकर करा दी। आज मैं अपनी पुत्री की ओर से निश्चिंत हूँ और इस सम्बन्ध में कभी किसी प्रकार का दवाब आज तक मैंने महसूस नहीं किया।

– विजयेश कुमार जैन, आरा (बिहार)

जो माँगे ठाकुर अपने से..... सोई सोई देवे

1.गुरु की कृपा असीम है। इसका अनुभव हर भाई–बहन को कभी न कभी अवश्य हुआ है। मेरे भी कुछ अनुभव हैं जिनको याद करके आज भी आँखें नम हो जाती हैं। बताते–बताते गला रुँध जाता है। आँखें बन्द करने पर पूरा दृश्य सामने से गुजर जाता है।

बात सन् 1999 की है। मेरे पति (श्री अशोक हजेला) को ए. पी. ओ. कर दिया गया था, जिसमें कर्मचारी को ऑफिस जाकर हाजिरी तो देनी पड़ती है किन्तु उसे तन्ख्वाह नहीं मिलती। मेरे पति भी रोज ऑफिस जाते थे और हाजिरी देते थे। हमारा बेटा भी उस समय छोटा था, उसके स्कूल की फीस व घर का खर्च आदि सभी थे। बड़ी मुश्किल आ पड़ी थी।

गुरुदेव की कृपा से मकान मालिक ने कह दिया कि जब पैसे मिले तब किराया दे देना। रोज का काम तो किसी तरह से चल रहा था। बेटे की फीस तीन महीने में एक बार देनी पड़ती थी। वह समय भी नजदीक आ रहा था। मन बहुत परेशान था, और हर समय एक ही ख्याल आता कि सब कुछ कैसे हो पायेगा। किन्तु अंकल (पूज्य गुरुदेव) से कुछ कहने या फोन करने की हिम्मत नहीं थी।

इसी बीच हमारा ग़ाज़ियाबाद जाना हुआ। हम दोनों शाम की पूजा में शास्त्री नगर उनके निवास स्थान पर पहुँचे। पूजा समाप्त हुई, प्रसाद लेने के बाद मैंने अपने पति से कहा कि वे अपनी बात गुरुदेव से कहें किन्तु वे भी हिम्मत नहीं कर पा रहे थे। परन्तु जैसे पिता अपने बच्चों के मन की बात बिना कहे ही जान लेता है वे भी समझ गये और पास बुला कर पूछा कि 'कुछ कहना है'। मेरे पति ने हाथ जोड़ कर कहा कि 'ए. पी. ओ कर दिया गया हूँ'। वे मुस्कुरा कर बोले ''कोई बात नहीं, सब ठीक हो जायेगा।'' फिर बोले

''तन्खवाह नहीं मिल रही है?'' फिर मेरी तरफ इशारा करके बोले– ''पैसा होम मिनिस्टरी से ले लो, इनके पास है।''

उस समय मैं कुछ भी नहीं समझी। ये भी अवाक रह गये। हम वापस जयपुर आ गये। अचानक दिमाग कौंधा, ध्यान आया कि मेरे पास जमा किये हुए 6000/ रुपये हैं, जिन्हें रखकर मैं भूल ही गयी थी। वे पैसे मैंने इन्हें दे दिये।

घर चलने लगा। इस प्रकार तीन महीने बीत गये और पैसे भी खत्म होने लगे। चिन्ता फिर बढ़ने लगी। इसी बीच पूज्य भाई साहब (डा. शक्ति जी), सीता दीदी व उनके छोटे भाई और उनकी पत्नी के साथ किसी विवाह समारोह में शामिल होने जयपुर पधारे। फोन आया कि वे हमसे मिलने घर आ रहे हैं। घर में कुछ नाश्ता नहीं था, समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूँ, तभी ख्याल आया कि आज तो वृहस्पतिवार है उन सबका तो व्रत होगा अतः सिर्फ चाय ही पिलानी है। दोपहर को वे लोग आये। चाय बनाई और पूछा कि 'आज तो आपका व्रत होगा, वे बोले 'नहीं तो'। बड़ी शर्मिंदगी हुई। मन ग्लानि से भर गया। जोड़े हुए पैसे लगभग समाप्त हो चुके थे। (राम और सीता तो थे पर मैं शबरी नहीं थी)। वे लोग खाली चाय पी कर ही वापस चले गये।

गुरुदेव सब देख रहे थे क्योंकि उनके सबसे प्रिय गुरु भाई बिना कुछ खाये मेरे घर से वापस आये थे। उनके जाने के बाद मैं खूब रोई और रोते–रोते सो गई। गहरी नींद में सपना देखा कि सत्संग हो रहा है, पूज्य गुरुदेव व अन्य सत्संगी भाई आये हैं। सबके लिए खाना बनाना है, किन्तु जिस डिब्बे में हाथ डालती हूँ वह खाली है। सब्जी भी कुछ नहीं है। बस कुछ खराब सी भिण्डी पड़ी हैं। मन परेशान है कि क्या करूँ। भागी–भागी फिर रही हूँ। घबरा कर आँख खुल गई। आँसू नहीं थम रहे थे। शाम को ये ऑफिस से आये, काफी खुश दिख रहे थे। उन्होंने बताया कि तन्खवाह मिल गई

है और साथ ही पोस्टिंग भी हो गई है। मैंने इन्हें स्वप्न की बात बताई। इन्होने समय पूछा तो मैंने बताया कि करीब 11 बजे के आसपास की बात है। इन्होंने बताया कि उसी समय के आसपास ही आदेश हुए हैं। हम दोनों के आँसू निकल पड़े। मन ही मन गुरुदेव के हाथ जोड़े।

गुरुदेव की इतनी कृपा रही कि न तो कोई काम रुका न हम एक समय भी भूखे सोये। किसी के आगे हाथ नहीं फैलाने दिया। ऐसे परम दयालु हैं मेरे गुरुदेव। यही विश्वास है कि वह हरदम हमारे साथ हैं।

2. परम पूज्य डा. श्री कृष्णलाल जी महाराज जी का कहना था कि 'ईश्वर से कुछ मत माँगो, ईश्वर जैसे रखे उसमें ही खुश रहो।' पर इसे हम नादान नहीं समझते। यह जानते हुए भी कि जो कुछ होता है सब ईश्वर की इच्छा से ही होता है, जो वह चाहता है वही होता है, हम गलती कर बैठते हैं।

हमारा बेटा मनु बड़ा हो रहा था। वह उस ओर कदम बड़ा रहा था जहाँ से उसके जीवन की नई शुरुआत होनी थी। वह बारहवीं कर चुका था। शुरु से ही उसकी इच्छा डाक्टर बनने की थी। उसकी इच्छा में ही हमारी भी इच्छा थी। मैंने कई बार उससे कहा कि वह नाना जी (परम सन्त डा. करतार सिंह जी) को बताये। किन्तु वह कहता था कि नाना जी सब जानते हैं कि किसे क्या चाहिए किसके लिए क्या अच्छा है, इसलिए वह उनसे कुछ नहीं कहना चाहता।

धीरे–धीरे वह समय भी आ गया जब उसे डाक्टरी के लिए प्रवेश परीक्षा देनी थी। मेरा मन परेशान रहता था कि यदि वह सफल नहीं हो सका तो क्या करेगा, क्या बनेगा। शायद एक माँ के नाते यह चिन्ता स्वाभाविक थी। परीक्षा से पहले गुरुदेव का आशीर्वाद लेने हम ग़ाज़ियाबाद पहुँचे। मन में कशमकश थी कि गुरुदेव से अपनी परेशानी के विषय में कहूँ न कहूँ। फिर यह विचार आया कि माँ भी बच्चे को दूध तभी देती है जब वह रोता है। तो मैंने निश्चय

कर लिया कि मैं अपनी बात उनसे कहूँगी। बस यही मेरी सबसे बड़ी भूल थी। अरे! माँ तो पहले से ही जानती है कि उसके बच्चे को कब क्या चाहिए। मैं मूर्ख थी।

गुरुदेव ने सबसे पहले मेरे पति से पूछा 'कैसे आना हुआ'। इन्होंने कहा 'बस आपके दर्शनों की इच्छा थी'। फिर बेटे से पूछा उसने भी ऐसा ही कुछ कहा। अन्त में मुझसे पूछा। मैं मूर्ख मैंने कह दिया 'इसकी परीक्षा है, मैं चाहती हूँ कि इसका मेडीकल में एडमीशन हो जाए।' बस इतना सुनना था कि गुरुदेव नाराज हो गए और चिल्लाकर बोले ''तुम्हारे कौन से दो चार बच्चे हैं। एक ही है, डाक्टर नहीं बनेगा तो कुछ और बनेगा। तुम जो चाहो वही हो.....।'' इसके आगे उन्होंने क्या-क्या कहा मुझे कुछ याद नहीं। मेरा दिमाग सुन्न पड़ चुका था। मैंने सोचा मैंने अपने बच्चे का जीवन खुद बिगाड़ दिया, अब कुछ नहीं हो सकता। लग रहा था कि वहीं मौत आ जाये।

थोड़ी देर में पूजा शुरु हो गई। ध्यान के बीच में अंकल ने मेरी तरफ इशारा कर के कहा 'बेटी भजन पढ़ो'। मैंने सत्संग में पहले कभी भजन नहीं पढ़ा था। पर उस समय जैसे किसी ने बटन दबा दिया हो और मैंने भजन पढ़ना शुरु किया- 'करूँ इल्तजा किससे मैं ऐ खुदा, नहीं दूसरा कोई तेरे सिवा।' बीच-बीच में गुरुदेव गज़ल की व्याख्या भी करते रहे। इसी बीच मैंने आँख खोलकर देखा तो वे प्रकाश का पुँज जैसे दिखाई दे रहे थे। मैंने तुरन्त आँख बन्द कर ली।

पूजा खत्म होने पर हम प्रसाद लेकर चलने लगे तो अंकल ने मनु से हाथ मिलाया और कहा- 'हैलो डाक्टर'। बस मनु को वहीं उन्होंने डाक्टर बना दिया।

आज उन्हीं के आशीर्वाद से, उन्हीं का हाथ थामकर उनका बेटा एक अच्छा डाक्टर बनने की राह पर है। वह पी. जी. आई. चंडीगढ़ में डी. एम. कर रहा है।

उस दिन के बाद से मैंने गुरुदेव से कुछ नहीं माँगा। समयानुसार उन्होंने सब कुछ दिया। इसी प्रकार वह अपनी कृपा बनाये रखें, और अपना प्रेम प्रदान करें।

3.संत की कृपा हर समय बरसती है। दिन रात उसे हमारी चिन्ता रहती है। वह हर सम्भव कोशिश करते हैं कि मेरे शिष्य ईश्वर प्रेम के काबिल बन सके इसलिए समय–समय पर हमें जगाते रहते हैं।

घटना काफी पुरानी है, मुझे सन् ठीक से याद नहीं है शायद 1977 की बात है। उस समय मैं कुछ दिनों के लिए सीता दीदी के पास कानपुर गई। एक दिन हम लोगों ने सोचा कि यहाँ से फतेहगढ़ पास है क्यों न परम सन्त पूज्य लाला जी महाराज की समाधी के दर्शन को चलें। दूसरे दिन सुबह जल्दी मैं, सीतादीदी, मेरी छोटी बुआ जी (जो अब नहीं हैं) फतेहगढ़ के लिए रवाना हो गए।

मैं समाधी पर पहली बार गई थी और मुझे पूजा करनी भी नहीं आती थी क्योंकि उस समय तक मेरी दीक्षा नहीं हुई थी। खैर हम सब आँखें बन्द करके बैठ गए। तभी मुझे ऐसा महसूस हुआ कि लालाजी महाराज, उनकी पत्नी व उनके पुत्र साक्षात् वहाँ अपनी–अपनी समाधी पर विराजमान हैं। एक अजीब सा रोमांचक अनुभव था।

हम लोग एक दो घन्टे बाद बस से वापस चल दिए। घर आकर मैंने किसी को कुछ भी नहीं बताया। उसी रात मुझे स्वप्न हुआ कि मैं सिकन्दराबाद में हूँ और मेरी अवस्था एक 14–15 साल की बच्ची की है। बड़े बाबा जी (परम सन्त डा. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज) कमरे के दरवाजे पर खड़े हैं और सरदार जी अंकल अन्दर बैठे हैं। मैं नंगे पैर कमरे में पहुँची और बड़े बाबा जी ने अंकल से

कहा कि 'मैं दरवाजे पर खड़े होकर देखता हूँ, आप इसे दीक्षा दीजिए।' मैं बैठ गई और अंकल ने मुझे दीक्षा दी। न प्रसाद था न माला कुछ नहीं था। बचपन में सुना था कि गुरु दक्षिणा दी जाती है लेकिन मेरे पास देने के लिए कुछ नहीं था। मैं परेशान सी इधर-उधर भाग रही थी, तभी किसी ने मेरे हाथ में 16/ रुपये पकड़ा दिए उसमें से 11रु मैंने गुरुदेव को दे दिये और 5 रु का प्रसाद खरीदा।

सुबह उठने पर मैंने स्वप्न का सारा हाल सीता दीदी को सुनाया। बात आई गई हो गई। कुछ समय बाद मैं ग़ाज़ियाबाद आई और अपने पापा (डा. महेश चन्द्र जी) को सारी बात बताई। पापा ने अंकल से मुझे दीक्षा देने का अनुरोध किया और अंकल के दिल्ली वाले घर में शाम को पूजा के बाद मेरी दीक्षा हुई। इस प्रकार मेरी दो बार दीक्षा हुई एक स्वप्न में और एक साक्षात्।

आज भी आँखें बन्द करके उस पल को महसूस कर लेती हूँ। बस गुरुदेव से यही प्रार्थना है कि इस काबिल बन सकूँ जैसा वे बनाना चाहते थे। – विनीता हजेला (जयपुर)

लय होना क्या है?

रामायण में गाथा है कि जब श्रीराम जी, भैया लक्ष्मण और सीता जी के साथ 14 वर्ष वनवास के बाद अवधपुरी लौटे तो सब कुटुम्बियों से मिलने लगे। जब भरत जी की बारी आई तो वह दौड़कर श्रीराम जी से लिपट गये। उन दोनों को गद्गद् देखकर लक्ष्मण जी ने हनुमान जी से पूछा– ''क्या आप बता सकते हैं कि दोनों में से ज़्यादा खुश कौन है?'' हनुमान जी ने आँखें बंद कीं और तुरन्त खोलकर कहने लगे – ''भैया, यहाँ तो यह भी नहीं मालूम होता कि इनमें से राम कौन है और भरत कौन हैं।''

आइये देखें – हम गुरुमुख हैं या मनमुख ?

- गुरुमुख का मतलब कुल परमार्थी कार्य–कर्मों से यह रहता है कि मालिक और सतगुरु प्रसन्न होवें। मनमुख सब कामों में अपने मन और इन्द्री का विलास और प्रसन्नता देखता है।
- गुरुमुख भूख प्यास को सहता है ताकि उसका भजन–बन्दगी अच्छी तरह बने। मनमुख जानवरों की तरह खाने–पीने में मगन रहता है और परमार्थी करतूत में मन नहीं लगाता है, आलस करता है।
- गुरुमुख हमेशा विचार में रहता है और डरता है। मनमुख तृष्णा और चाह दिन–दिन बढ़ाता है और बेफिक्र और निडर रहता है।
- गुरुमुख सतगुरु के सिवाय बेखौफ रहता है। मनमुख सतगुरु के सिवाय सबसे डरता है।
- गुरुमुख सतगुरु के सिवाय सबसे निराश रहता है। मनमुख सतगुरु के सिवाय सबसे आशा रखता है।
- गुरुमुख तन्हाई और एकान्त को पसन्द करता है। मनमुख भीड़भाड़ और शोरगुल से राज़ी होता है।
- गुरुमुख धन को परमार्थ पर न्योछावर करता है। मनमुख परमार्थ को धन पर न्योछावर करता है, यानी धन के लिए अपने परमार्थी नुकसान का भी ख़्याल नहीं करता है।
- गुरुमुख भजन करता है और अपने दोष–दुर्गुणों के लिए पछताता है, रोता है। मनमुख गुनाह पर गुनाह करता जाता है और खुश होता है, हँसता है।

शेष अगले अंक में.....

रामाश्रम सत्संग (रजि.) गाज़ियाबाद

रजिस्टर्ड आफिसः 9–10, रामाकृष्णा कॉलोनी, जी टी रोड, गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश।
फोनः 0120.2790334, 09717097980

सत्संग के नियम

रामाश्रम सत्संग के संस्थापक परमसंत डा. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज द्वारा दीक्षित सत्संगियों (जिज्ञासुओं) के लिये कुछ अक़ायद (नियम) दुनियावी ज़िदगी बसर करने और अभ्यास वग़ैराह के मुताल्लिक निर्धारित किये गये थे। हमारे गुरुदेव परमसंत डा. करतार सिंह जी साहब ने स्वयं इन नियमों का न सिर्फ उल्लेख अपने प्रवचनों में किया परन्तु उनका अक्षरशः पालन अपने जीवन में किया और सभी सत्संगियों को भी करवाया। उनका कहना था कि अपने जीवन में सुधार लाने के लिये दीक्षित सत्संगियों को इन नियमों का पालन करना अनिवार्य है। यह नियम नीचे दिये जा रहे हैं;

- ❖ घर में पूजा का एक स्थान और समय निश्चित कर लें जहाँ आप हर रोज़ सुबह और शाम को (हो सके तो परिवार के साथ) पूजा किया करें।
- ❖ सूरज निकलने से पहले प्रत्येक मनुष्य उठ जायें।
- ❖ सब लोग शौच आदि से निवृत्त हो कर, अगर स्नान करने की आवश्यकता हो तो स्नान करें, वरना हाथ मुँह धोयें, अगर समय न हो तो नहाने की ज़रुरत नहीं है ताकि पूजा का समय न निकल जाये।
- ❖ जो भी अभ्यास का या पूजा का तरीका आपको गुरुदेव ने बताया है उसके अनुसार रोज़ की पूजा करें। यदि किसी

प्रकार की कोई शंका मन में है, पूजा के बारे में तो आप गुरुदेव से अवश्य पूछ लें। सुबह और शाम उसी प्रकार से पूजा करें।

- ❖ सत्संगियों का फर्ज़ है कि झूठ से परहेज़ करें और जहाँ तक हो सके हक–हलाल यानी ईमानदारी की कमाई पर ही गुज़ारा करें।
- ❖ किसी भी किस्म का जुआ या सट्टा कभी नही खेलें।
- ❖ गैर औरतों की सोहबत से परहेज़ करें और जहाँ तक हो सके अकेले में किसी भी स्त्री की संगत न करें।
- ❖ किसी की बुराई न करें, जहाँ तक हो सके एकान्त सेवन करें। किसी का दिल न दुखायें।
- ❖ छोटे बच्चों की सोहबत से और जहाँ तक हो सिनेमा वगैराह से भी परहेज़ करें
- ❖ हर किस्म के नशे से बचें और माँस आदि का सेवन न करें।
- ❖ किसी भी राजनैतिक पार्टी या सोसाईटी का मेम्बर न बनें।
- ❖ हर मत के अवतारों, पैगम्बरों और बुजुर्गों की समान रूप से इज़्ज़त करें और हर मज़हब की किताबों को इज़्ज़त की निगाह से देखें।
- ❖ अपनी दुनियावी तरक्की के लिये परमात्मा की मौज का सहारा ले कर ज़रुर कोशिश करें, लेकिन अगर कामयाबी न हो तो उसकी मौज समझ कर परेशान न हों।
- ❖ जिस हाल में परमात्मा ने रखा है उसमें खुश रहें।